ASTRO ARPITA NATH

देव, मनुष्य और राक्षस गण: कुंडली मिलान में गण मिलान

Arpita Nath द्वारा · योग, दोष एवं मिलान · 2026-09-20

वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, गण कूट कुंडली मिलान (Kundli Milan) और अनुकूलता के आकलन में उपयोग किए जाने वाले आठ महत्वपूर्ण घटकों (अष्टकूट) में से एक है। संबंधों के मिलान से परे, आपका गण आपके स्वाभाविक स्वभाव, सहज प्रकृति, ऊर्जावान स्पंदन और दुनिया के प्रति आपके मूल मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण की गहरी समझ प्रदान करता है।

आपके गण का निर्धारण आपके जन्म के समय चंद्रमा के नक्षत्र (जन्म नक्षत्र) द्वारा होता है। 27 नक्षत्रों को नौ-नौ तारों की तीन प्राथमिक श्रेणियों में समान रूप से विभाजित किया गया है:

1. देव गण (दिव्य / सात्विक)
2. मनुष्य गण (मानव / राजसिक)
3. राक्षस गण (उग्र / तामसिक)

इन तीन मूल प्रवृत्तियों को समझने से यह जानने में मदद मिलती है कि कोई व्यक्ति भावनाओं को कैसे व्यक्त करता है, विवादों पर कैसी प्रतिक्रिया देता है और दैनिक मानवीय बातचीत को कैसे संभालता है।

1. देव गण (दिव्य स्वभाव)

• **शासक गुण:** सत्त्व (पवित्रता, प्रकाश, ज्ञान, शांति)

• **नक्षत्र**: अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, रेवती।

• **मूल दर्शन:** अहिंसा, परोपकार, उच्च नैतिकता और भावनात्मक शांति।

प्रमुख व्यक्तित्व लक्षण -

देव गण में जन्मे व्यक्ति स्वाभाविक रूप से दया, सहानुभूति, कूटनीति और आध्यात्मिक विकास की ओर आकर्षित होते हैं। वे ऐसे वातावरण को प्राथमिकता देते हैं जो सामंजस्यपूर्ण, शांत और स्वच्छ हो।

• **व्यवहार शैली:** विनम्र, मृदुभाषी, धैर्यवान और उदार। वे अक्सर परिवारों और कार्यस्थलों में स्वाभाविक शांतिदूत के रूप में कार्य करते हैं।

• **संघर्ष समाधान:** देव गण के जातक सीधे टकराव से बचते हैं। वे बातचीत, क्षमा और नैतिक समझौते को प्राथमिकता देते हैं। वे अक्सर शत्रुतापूर्ण, विषाक्त या अत्यधिक संघर्षपूर्ण माहौल में असहज हो जाते हैं या मौन साध लेते हैं।

• **कमज़ोरियाँ:** अपने सौम्य और विश्वासपात्र स्वभाव के कारण, वे कभी-कभी अत्यधिक भोले हो सकते हैं, आसानी से बहकावे में आ सकते हैं, या जीवन की कटु वास्तविकताओं से निपटते समय अपनी सख्त सीमाएं तय करने में धीमे हो सकते हैं।

2. मनुष्य गण (मानवीय स्वभाव)

• **शासक गुण:** रजस (जुनून, महत्वाकांक्षा, सक्रियता, व्यावहारिकता)

• **नक्षत्र**: भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद।

• **मूल दर्शन:** यथार्थवाद, भौतिक स्थिरता, आत्म-रक्षा और पारिवारिक कल्याण।

प्रमुख व्यक्तित्व लक्षण -

मनुष्य गण दैनिक मानवीय स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है - आदर्शों और अस्तित्व के बीच का संतुलन। इस गण के तहत जन्म लेने वाले व्यक्ति व्यावहारिक, मेहनती, यथार्थवादी और सामाजिक प्रतिष्ठा, करियर की प्रगति और पारिवारिक सुरक्षा से अत्यधिक प्रेरित होते हैं।

• **व्यवहार शैली:** व्यावहारिक, महत्वाकांक्षी, आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से जिम्मेदार। वे सामाजिक प्रतिष्ठा, परंपराओं और वित्तीय स्वतंत्रता की गहराई से परवाह करते हैं।

• **विवाद समाधान:** यथार्थवादी और नपा-तुला। वे किसी उग्र स्वभाव की तरह अनावश्यक झगड़े मोल नहीं लेते, न ही पूरी तरह से किसी दैवीय स्वभाव की तरह बार-बार दूसरा गाल आगे कर देते हैं। उकसाए जाने पर वे अपनी चीजों की रक्षा करते हैं।

• **कमजोरियां:** वे भौतिक परिणामों, सामाजिक स्वीकृति, सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं से अत्यधिक जुड़े हो सकते हैं। असंतुलित होने पर, वे सांसारिक सफलता को लेकर चिंता का अनुभव कर सकते हैं।

3. राक्षस गण (उग्र / निर्भीक स्वभाव)

• **शासक गुण:** तामस (तीव्रता, मूल ऊर्जा, परिवर्तन, उग्र आत्मरक्षा)

• **नक्षत्र**: कृत्तिका, आश्लेषा, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, शतभिषा।

• **मूल दर्शन:** अस्तित्व (सर्वाइवल), प्रभुत्व, सत्य को उजागर करना, सहज ज्ञान की शक्ति और निडर होकर सीमाएं तय करना।

व्यक्तित्व के मुख्य लक्षण -

आधुनिक लोकप्रिय संस्कृति में "राक्षस" शब्द को अक्सर गलत तरीके से "बुराई" से जोड़कर देखा जाता है। ज्योतिष में, राक्षस गण केवल एक उग्र, मौलिक, अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और जुझारू ऊर्जा को दर्शाता है। ये जातक स्वाभाविक रूप से रक्षक, गहन विचारक और योद्धा होते हैं, जिन्हें आसानी से मूर्ख नहीं बनाया जा सकता और न ही दबाया जा सकता है।

• **व्यवहार शैली**: स्पष्टवादी, तीक्ष्ण बुद्धि, अंतर्ज्ञानी, निडर और लीक से हटकर चलने वाले। उनके पास एक सहज 'छठी इंद्री' होती है जो दूसरों के छिपे हुए इरादों, धोखे और कपट को तुरंत भांप लेती है।

• **संघर्ष समाधान:** सीधा और अडिग। वे किसी भी संघर्ष, आमने-सामने की बातचीत या पुरानी रूढ़ियों को तोड़ने से पीछे नहीं हटते। वे अपने लिए, अपने सिद्धांतों के लिए और कमजोरों की रक्षा के लिए पूरी ताकत से लड़ते हैं।

• **कमजोरियां**: कभी-कभी भयभीत करने वाले, शक्की, अत्यधिक आक्रामक या क्षमा न करने वाले लग सकते हैं। वे दिखावटी शिष्टाचार या अनिर्णय की स्थिति को बिल्कुल पसंद नहीं करते।

गण के लिए अष्टकूट विवाह मिलान के नियम

पारंपरिक संबंध अनुकूलता में, कुल 36 अंकों (गुणों) की प्रणाली में से गण कूट को 6 अंक प्राप्त हैं। यह इस बात का आकलन करता है कि दंपत्ति की भावनात्मक तरंगें और विवाद सुलझाने के तरीके आपस में सामंजस्य बनाएंगे या टकराव पैदा करेंगे:

• **समान गण (देव + देव, मनुष्य + मनुष्य, राक्षस + राक्षस):** 6 / 6 अंक। सर्वोत्तम तालमेल। दोनों साझेदारों की स्वाभाविक प्रतिक्रियाएं, भावनात्मक सहनशीलता और संवाद शैली एक समान होती है।

• **देव + मनुष्य:** 5 / 6 अंक। शुभ और सहयोगी। देव गण का साथी रिश्ते के आध्यात्मिक और नैतिक स्तर को ऊंचा उठाता है, जबकि मनुष्य गण का साथी परिवार को व्यावहारिक वास्तविकता से जोड़े रखता है।

• **मनुष्य + राक्षस:** 0 से 1 अंक। मतभेद और टकराव हो सकते हैं। जब तक कुंडली में अन्य संतुलित करने वाले कारक न हों, राक्षस गण की तीव्र ऊर्जा मनुष्य गण के पारंपरिक और सुरक्षा चाहने वाले स्वभाव को दबा या थका सकती है।

• **देव + राक्षस:** 0 / 6 अंक (गण दोष)। शास्त्रीय ग्रंथ पारंपरिक रूप से यहाँ सावधानी बरतने की सलाह देते हैं क्योंकि दोनों के मूल स्वभाव विपरीत होते हैं: सौम्य, क्षमाशील कूटनीति (देव) का सदैव शक्की, तीव्र और सीधे टकराव वाले स्वभाव (राक्षस) से विरोध होता रहता है।

गण दोष के महत्वपूर्ण अपवाद

गण अनुकूलता में कम अंक मिलने का यह स्वतः अर्थ नहीं है कि संबंध सफल नहीं हो सकता। शास्त्रीय ज्योतिष में इसके कई प्रबल परिहार (भंग) बताए गए हैं:

1. चंद्र राशि स्वामियों की ग्रह मैत्री (राशि मैत्री): यदि दोनों साझेदारों की चंद्र राशियों के स्वामी आपस में मित्र हैं (जैसे, गुरु और मंगल अथवा शुक्र और शनि), तो गण दोष काफी हद तक निष्प्रभावी हो जाता है।

2. एक ही चंद्र राशि (एक राशि): यदि दोनों साझेदारों की चंद्र राशि एक ही हो लेकिन नक्षत्र अलग-अलग हों, तो यह दोष समाप्त हो जाता है।

3. नाड़ी कूट का सामंजस्य: यदि 8 अंकों वाला नाड़ी कूट (आनुवंशिक, शारीरिक और आध्यात्मिक अनुकूलता) मजबूत और दोषमुक्त है, तो यह गण की भिन्नताओं से उत्पन्न तनाव को निष्प्रभावी कर सकता है।

4. मजबूत D9 (नवांश) लग्न और सप्तम भाव: एक सहायक नवांश कुंडली और गुरु की परस्पर दृष्टि स्वभाव से जुड़ी किसी भी भिन्नता को दूर करने के लिए आवश्यक परिपक्वता और सहजता प्रदान करती है।

https://astroarpitanath.com/hindi/the-three-ganas/
ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।